ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Special Issue | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Special Issue

अतिथि संपादक

डॉ. प्रकाश शिंदे

डॉ. मुखत्यार शेख

डॉ. नागनाथ वारले

डॉ. गोविंद शिवशेट्टे

डॉ. अनिलकुमार राठोड

डॉ. भगवान कदम

प्रा. राकेश वैद्य

डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

94) A Study of Cultivated Area and Irrigation Status in Marathwada region
Mr. Manoj Shamsundar Patil & Dr. Aghav M.P, Dist. Beed ||343

95) Foreign Universities in India: The Possibilities and Potentials for ...
Mr.Shoeb Khan ||349

96) Women entrepreneurship Development in India
Virender kumar Saini & Varun Kumar, Pauri Gharwal, Uttarakhand ||353

97) New Challenges and Importance of Right to Information Act 2005
Surendra Singh Alawa, Seoni ||358

98) IMPACT ON CHILDREN AFTER THE PASSAGE OF THE JUVENILE JUSTICE (CARE ...
Rakesh Vaidya, Bhopal ||362

99) Common liberties and Human Right of Elderly Person During Covid - 19
Tripti Soni, Balaghat (M.P.) ||365

100) Teacher Education Reforms - From History to 21st Century
DR. PAWAN KUMAR ARYA, Rohtak ||371

101) दार्शनिकता के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय का उपन्यास साहित्य
प्रा. डॉ प्रकाश भगवानराव शिंदे, जनपद नांदेड़ महाराष्ट्र ||375

102) दलित साहित्य चळवळ आणि समकालीन साहित्यप्रवाह
प्रा. डॉ. राजेंद्रकुमार लक्ष्मणराव लोणे, जि. नांदेड ||379

103) शिक्षा के क्षेत्र में संचार और तकनीक की उपादेयता
डॉ. यशवंतकर संतोष कुमार लक्ष्मण, जनपद बीड, महाराष्ट्र ||383

104) स्वराज्य, राष्ट्रभाषा, साहित्य और काका कालेलकर
डॉ.भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे,सातारा(स्वायत्त) (महाराष्ट्र) ||388

105) कौसल्या बैसंत्री के दोहरा अभिशाप में दलित पात्र का चिंतन
गजेन्द्र सिंह, जिला भिण्ड (म.प्र.) ||392

106) भारतीय साहित्य शिक्षक का अंतरराष्ट्रीय सद्भावना में भूमिका
डॉक्टर विशेश्वर यादव, जमशेदपुर, झारखंड ||396

107) आदिवासी साहित्य व 'स्त्री' जीवन
प्रा.डॉ.विजयेंद्र विश्वनाथ पाटील, जि.जळगांव ||401

108) महाराष्ट्राची प्राकृतिक रचना व भूस्खलन कारणमिमांसा (संदर्भ २०२१)
प्रा.डॉ देविदास निळकंठ भोयर, जि. लातूर ||403

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

103

शिक्षा के क्षेत्र में संचार और तकनीक की उपादेयता

डॉ. यशवंतकर संतोष कुमार लक्ष्मण
हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजी नगर गढ़ी,
तहसील गेवराई जनपद बीड, महाराष्ट्र

समय और समाज सदा ही परिवर्तनशील रहा है क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का अटूट नियम है और इस नियम से मनुष्य, साहित्य और शिक्षा आबध्द है। प्राचीन काल से यह विदित है कि, जो भी कार्य प्रकृति के विरुद्ध किया जाता है उसे प्रकृति कभी माफ नहीं करते जैसे वर्तमान दौर में समग्र विश्व कोरोनावायरस जैसी महामारी से झुज रहा है। इस दौर में भी मनुष्य यदि अपने आप को सुरक्षित रखने का भरसक प्रयास कर रहा है तो उसका अत्याधिक श्रेय शिक्षा को जाता है। वर्तमान समय में हम भारत की भव्य एवं उच्च प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' पर आधारित हमारा जीवन यापन कर रहे हैं। कोरोनावायरस जैसी महामारी का समूचा विश्व एक परिवार की भांति सामना कर रहा है यह शिक्षा से मनुष्य में आय बदलाव तथा शिक्षा के क्षेत्र में आई संचार और तकनीक के उपादेयता के कारण ही संभव हो रहा है।

मनुष्य के जीवन में शिक्षा की उपलब्धि बेजोड़ है। शिक्षा मनुष्य के विचारों और भावों को बड़ी सफलता के साथ प्रस्तुति करने का साधन है। सामान्यत: शिक्षा दो प्रकार की पाई जाती है– एक संकुचित और दूसरी व्यापक शिक्षा। संकुचित शिक्षा का अर्थ है – ''जब प्रत्येक पीढ़ी अपने उत्तराधिकारी ओ को निपुण बनाने के लिए उन्हें पाठ्यक्रम पर आधारित ज्ञान प्रदान करती है।'' तथा व्यापक शिक्षा वह है, ''जो जीवन पर्यंत संचालित रहती है'', किंतु इन शिक्षाओं में जो निरंतर बदलाव आ रहे हैं उसका स्वीकार करना ही वैश्विक शिक्षा कहलाती है। किसी भी देश की शिक्षा उस देश की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास का दर्शन कराने में सक्षम होती है। भारत में भी जिस प्रकार समाज का विकास हुआ उसी रूप में शिक्षा का स्वरूप भी निरंतर विकासशील रहा है। भारत में अंग्रेजों का आगमन होने से पूर्व मठों में, गुरुकुल में शिक्षा के पाठ पढ़ाए जाते थे किंतु १८५० के बाद लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा का आरंभ कर गुरुकुल पद्धति को समाप्त कर दिया। शिक्षा व्यवस्था ने इस बदलाव को अपनाया और इस बदलाव को वर्तमान समय में संचार और तकनीकी की उपादेयता उल्लेखनीय है।

शिक्षा के क्षेत्र में संचार की भूमिका अनन्य साधारण है। वर्तमान समय में शिक्षा में संचार का अहम और महत्वपूर्ण योगदान इसलिए भी है कि संचार की वजह से संचार प्रौद्योगिकी की अलग से पढ़ाई होने लगी, जिसमें संचार के अलग–अलग माध्यमों ने शिक्षा को गति प्रदान की। आज संचार के द्वारा शोध–कार्य आसान हुआ है इतना ही नहीं तो संचार ने न केवल छात्रों को बल्कि प्रशासनिक कार्य को भी अत्याधिक गतिशील बनाया है। संचार का परिचय उपकरण और उसकी उपयोगिता अर्थात उपादेयता या प्रदेय आदि का उल्लेख करना आवश्यक बनता है।

'संचार' शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है।

'चर' का अर्थ है चलना। इससे संचार शब्द बना संचार अर्थात – आगे बढ़ना, फैलना आदि संचार से अभिप्राय मानव समूह के सभी मिले–जुले वर्गों तक बड़े तौर पर चाहे वह समीप हो या दूर कुछ विचार, भाव अथवा सूचनाएं शब्दों या प्रतीकों द्वारा संप्रेषित किए जाते हैं और इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों आदि का प्रयोग किया जाता है। संचार का अर्थ ही है, ''विभिन्न उपकरणों से सूचना और शिक्षा को एक स्थान से अथवा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने की प्रक्रिया है।'' संचार का कार्य ही है कि अधिक से अधिक शिक्षा व्यवस्था को सुचारू, सुलभ, आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाने में अपने उपकरणों को विशेष रूप से प्रभावशाली बनाना संचार हैं। अत: किसी सूचना विचार या भाव का संप्रेषण बड़ी संख्या में होता है, वहां संचार होता है। संचार के संदर्भ में विभिन्न विचारकों ने अपनी–अपनी दृष्टि से उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। कुछ परिभाषाएं संचार का अर्थ स्पष्ट करने के लिए यहां देना आवश्यक है जैसे रेड फिल्ड के अनुसार ''संचार तथ्यों तथा विचारधाराओं में मानव विनिमय का विस्तृत क्षेत्र है।'' वही डेनिस मैकबेल ने कहा, ''संचार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों के प्रेषण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है कोई भी व्यक्ति संचार के बिना जी नहीं सकती।'' संचार को और अधिक स्पष्टोक्ति देते हुए श्री राजेंद्र ने कहा है, ''संचार विचारों, सूचनाओं, उत्प्रेरक संकेतों के आदान–प्रदान से हमारे समग्र जीवन मुल्यों और संस्कृति की संरचना होती है।'' इस प्रकार संचार के मूल तत्व की हमारे जीवन में स्थापना किस तरह से होती है यह संचार से स्पष्ट होता है। उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि विचार, भाव, मत, तथ्य, संदेश आदि का उद्देश्य पूर्ण संप्रेषण तथा उनका लोगों पर होने वाला निश्चित प्रभाव ही संचार कहलाता है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से अध्ययन और अध्यापन की प्रभावशीलता को प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि पारंपरिक कक्षा के वातावरण की तुलना में संचार के माध्यम से पढ़ना अत्याधिक स्फूर्ति दायक लगता है। कक्षा में और पढ़ाई में सुधार लाने के लिए संचार साधनों की भूमिका उत्प्रेरक साबित हो रही है। संचार के माध्यम न केवल पढ़ने पढ़ाने तक सीमित रहे हैं बल्कि आजकल आकलन और मूल्यांकन के पहलुओं को भी प्रवाहित कर रहे हैं। साक्षरता आंदोलन, स्वच्छ भारत अभियान, शिक्षा अभियान, जनजागृति आदि सभी क्षेत्रों में संचार साधनों की उपादेयता अतुलनीय है।

शिक्षा के क्षेत्र में संचार की उपादेयता के साधनों में दो प्रकार के साधनों की उपादेयता या योगदान को रेखांकित करना आवश्यक है। संचार के परंपरागत साधन और आधुनिक साधन। परंपरागत साधनों में लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य और मेला, उत्सव के माध्यम से शिक्षा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विभिन्न कथा लोकनाट्य को माध्यम बनाकर शिक्षा को विकसित किया गया जिसमें लोककथा, लोकतत्व, लोकनाट्य लोकगीत, लोककला आदि है किंतु वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में संचार के योगदान का महत्व और अधिक बढ़ गया। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में समाचार–पत्र, दूरदर्शन, रेडियो, सिनेमा या फिल्म, कंप्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल, फैक्स, फोन, फेसबुक, फेसबुक पेज फेसबुक लाइव, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, प्रोजेक्टर, मॉडेम, गूगल, गूगल क्लासरूम, झूम ऐप आदि विभिन्न संचार और तकनीक के प्रयोग से शिक्षा को एक उच्च स्तर पर विकसित

करने में योगदान दे रहे हैं।

संचार और तकनीकी आज के दौर में शिक्षा के विकास में सबसे बड़े साधन है। संचार आज के अर्थात वर्तमान मानव के दैनिक जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। संचार का उपयोग कंप्यूटर, मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप आदि किसी भी साधनों का उपयोग कर प्रयोग कर सकते हैं जो प्रयोग करने के लिए बड़ा सहज, सरल और आसान तथा मनोरंजक भी होता है।

'रेडियो' संचार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है जिसका आरंभ १९ वीं शताब्दी में लगभग १९२० में हुआ जो शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। रेडियो पर किसी भी जानकारी को गांव के अंतिम चरण के लोगों तक आसानी से पहुंचाया जा सकता है। किसी भी जानकारी को वह सहज ही पहुंचाने में उपयोगी होता है। ग्रामीण लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक या सजग करने में रेडियो ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। रेडियो के साथ–साथ टीवी अर्थात टेलीविजन दूरदर्शन ने भी शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान काल में आधुनिक संचार माध्यमों में दूरदर्शन प्रभावशाली रहा है। दूरदर्शन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है जो आज घर घर में पहुंचा है। वर्तमान परिस्थिति को देखकर भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी तथा विद्यमान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कक्षा पहली से लेकर १२ वीं तक टीवी चौनल अर्थात शैक्षिक चौनल के लिए १२ विशेष चौनल को चलाने के लिए विशेष पैकेज घोषित किए हैं इससे यह बात और स्पष्ट हो जाती है कि कोविड–१९ हो या उससे पहले की स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में हर समय रेडियो और दूरदर्शन का अपना विशेष उल्लेखनीय स्थान रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में संचार माध्यमों का साधन 'फिल्म या सिनेमा' का अपना विशेष योगदान है क्योंकि फिल्म या सिनेमा एक कलात्मक माध्यम है, इससे कथा, पटकथा लेखन, दिग्दर्शन, संगीत, नृत्य, शिल्प कला एवं कलाकार को निरंतर कुछ न कुछ नया करने के लिए प्रवृत्त करता है जिससे शिक्षा में भी नए नए विषयों पर चर्चा होती है। साहित्य और सिनेमा का अन्योन्याश्रित संबंध है। प्रेमचंद के 'मिल मजदूर' की पटकथा से वर्तमान समय में उदय प्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की', मोहनदास', 'मैंगोसिल', आदि विभिन्न रचनाओं पर फिल्म बनी है। कमलेश्वर के लगभग तीन उपन्यासों पर फिल्म बनी है साथ ही हिंदी की रचनाओं में 'आषाढ़ का एक दिन', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'मारे गए गुलफाम' आदि रचनाओं पर फिल्में बनी हैं। भारतीय सिनेमा समाज को जागृत करने का सफल प्रयास करता है। फिल्म न केवल मनोरंजन बल्कि मनोरंजन के साथ जन जागृति का अभियान भी चलाता है, जैसे एड्स महामारी और भविष्य में कोरोना वायरस की दुष्परिणामों को लेकर भी रचनाकार लिखेंगे और उस पर फिल्में बनेंगे यह शिक्षा के क्षेत्र में फिल्म का या सिनेमा का उल्लेखनीय योगदान है।

शिक्षा के क्षेत्र में 'कंप्यूटर' का योगदान बहुत अधिक रहा है क्योंकि कंप्यूटर के माध्यम से छात्र अध्यापन की सामग्री को एकत्रित कर सकते हैं जिससे समय और कागज दोनों की बचत होती है। वर्तमान समय में प्राइमरी स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक हर जगह कंप्यूटर का प्रयोग अनिवार्य हो गया है। इसे हम ऑनलाइन लाइब्रेरी के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। छात्रों का अहवाल अब कंप्यूटर में सुरक्षित रख सकते हैं, साथ ही अध्यापक पावर पॉइंट के जरिए कक्षा में

अत्यधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकते हैं और छात्र बड़ी रुचि से पढ़ सकते हैं। छात्र अपने नोट्स बनाने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग कर सकते हैं साथ ही नोट्स के लिए पावर पॉइंट, एक्सेल, वर्ड आदि का प्रयोग कर प्रभावी रूप से ज्ञान का अर्जन कर सकते है। इतना ही नहीं तो अपने दोस्तों के साथ ऑनलाइन शिक्षा भी लेने में कंप्यूटर मददगार है। अत: कहा जाएगा कि कंप्यूटर अब शिक्षा का एक अंग बन गया है। जिस व्यक्ति को कंप्यूटर का ज्ञान नहीं वह आज के समय में पढ़कर भी अनपढ़ा समझा जाएगा।

शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर की तरह 'इंटरनेट' का प्रयोग अथवा इंटरनेट की उपयोगिता छात्र और अध्यापक दोनों के लिए अमृत से कम नहीं है क्योंकि किसी भी शिक्षक या विद्यार्थी के पास यदि मोबाइल या कंप्यूटर है तो वह किसी भी विषय के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट शिक्षण की तीसरी आंख बन गई है ऐसा कहे तो अतिशयोक्ति न होगी। कोरोनावायरस ने वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षा के द्वार सबके लिए खोल दिए हैं। जो शिक्षक ऑनलाइन पढ़ाना नहीं जानता उन्हें भी अलग—अलग संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षित करने का पुरजोर प्रयास किया जा रहा है। इंटरनेट पर आज कई विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षण के प्रयोग सफल होते हैं दिखाई दे रहे हैं। दूर शिक्षण में जो शिक्षा से कोसों दूर है, किंतु इंटरनेट का उसे ज्ञान है तो वह ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकता है जिसमें समय और श्रम दोनों की बचत होगी। आज के दौर में न केवल दूर शिक्षा बल्कि स्नातक तथा स्नातकोत्तर की कक्षाएं वैश्विक महामारी के कारण इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन हो रही है यह स्थिति विगत २५ मार्च से आज २५ मई २०२० तक निरंतर चलते आ रहे हैं। यदि किसी छात्र में या जो व्यक्ति सीखना चाहता है उसमें यदि योग्यता है तो वह स्वतंत्र रूप से सीखने की आवश्यकता को इंटरनेट के द्वारा प्राप्त कर सकता है। इंटरनेट पर विभिन्न वेब आधारित साइटों से वह शिक्षा प्राप्त कर सकता है अर्थात इंटरनेट शिक्षण के क्षेत्र में व्यक्ति को स्वावलंबी बनाने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

आज टेक्नोलॉजी इतनी बढ़ गई है कि एक देश के किसी कोने में बैठ कर दूसरे देश के छात्रों एवं छात्राओं को तथा छात्र अध्यापकों के साथ जुड़ सकते हैं और ज्ञानार्जन कर सकते हैं। वर्तमान समय में 'यूट्यूब' पर शिक्षा एवं ज्ञान के लिए अनेक प्रकार के ज्ञानवर्धक चौनल चलाए जा रहे हैं जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के साथ अपना ज्ञान दूसरों तक पहुंचान सकता है। वर्तमान समय में युटुब को तथा गूगल को गुरु के रूप में स्वीकृत किया गया है। आप यूट्यूब पर जिस विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं यदि उसे सर्च करते हैं तो उससे संबंधित कई वीडियो आपको प्राप्त हो सकते हैं और उसे सब्सक्राइब करने पर निरंतर नहीं नहीं जानकारी को आप देख सकते हैं इंटरनेट के भांति ही यूट्यूब भी शिक्षण के क्षेत्र में अमृततुल्य बनता जा रहा है।

शिक्षण के क्षेत्र में 'फेसबुक' तथा 'झूमऐप' काफी असरदार सिद्ध होते दिखाई दे रहे हैं। फेसबुक लाइव पर अध्यापक अपने छात्रों को ऑनलाइन पढ़ाई के बारे में चर्चा कर सकते हैं इसका बृहत उदाहरण कोविड—१९ में भारत के प्रधानमंत्री तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने कई बार नागरिकों को संबोधित किया यही काम अध्यापक अध्यापन के क्षेत्र में भी कर सकते हैं। साथ ही वर्तमान समय में झूमऐप के द्वारा ऑनलाइन क्लास की सुविधा शिक्षण क्षेत्र में उपलब्ध हुई है। कई महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय वेबीनार

का आयोजन झुमऐप के द्वारा बड़ी सफलता के साथ किये जा रहा है। हजारों अध्यापकों का प्रशिक्षण झूमऐप के द्वारा सफलता से पूरा हो रहा है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने अब एमफिल तथा पी—एच. डी. की मोखिकी परीक्षा को ऑनलाइन लेने के लिए आदेश जारी किए हैं इसमें महाराष्ट्र के यशवंतराव चौहान महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक के द्वारा अभी—अभी पी—एच.डी. की मौखिकी परीक्षा का आयोजन किया है जिसमें शोधार्थी मुंबई में, कुलपति तथा अधिष्ठाता नासिक में, शोध निदेशक सोलापुर में और बहिस्थ परीक्षक नांदेड़ में स्थित होने के बाद भी इस आँनलाईन प्रक्रिया के द्वारा पी—एच.डी. की मौखिकी परीक्षा का सफल आयोजन किया है यह शिक्षा के क्षेत्र में अपने आप में विशेष बात है।

मानव और मानव निर्मित यंत्रों की परस्पर क्रिया जिसमें मानव के द्वारा जो यंत्र बनाए गए हैं, जिससे शिक्षा में अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है, उच्च शिक्षा को उसे तकनीकी शिक्षा कहा जाएगा। तकनीकी शिक्षा में 'गूगल डॉस' और 'गूगल क्लासरूम' यह दो अत्याधिक प्रचलित और तकनीक के व्यवहारिक उपयोग के लिए सहज है। गूगल डॉस २२ भारतीय भाषाओं में उपयोग में लाया जाता है इसके लिए हउंपस अकाउंट होना आवश्यक है जिसमें आप gmail+Dos-google-com इसमें आप टूल्स में जाकर वॉइस टाइपिंग कर सकते हैं जिसके लिए आपको भाषा का चयन करना पड़ेगा और आप इसमें अनुवाद भी कर सकते हैं। फाइल सेव कर पीडीएफ मोड भी दे सकते हैं। यह तकनीक के व्यावहारिक उपयोग के लिए बहुत लाभदायक है। वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षा के लिए 'गूगल क्लासरूम' का अत्याधिक प्रयोग किया जा रहा है। हउंपस अकाउंट पर कंटिन्यू बटन को दबाने के बाद ज्वाइन क्लास और क्रिएट क्लास दो ऑप्शन दिखाई देती है छात्र ज्वाइन क्लास को क्लिक करें और अध्यापक क्रिएट क्लास को गूगल क्लासरूम में आप स्ट्रीम, क्लास वर्क और अंक भी दे सकते हैं।

संक्षिप्त रूप में यही कहा जाएगा कि, आँनलाईन शिक्षण अब शिक्षा का एक भाग बन गया है यदि हम अपने आपको इसके साथ जोड़ने का प्रयास नहीं करेंगे तो शिक्षा के क्षेत्र में एक कदम अपने आप को पीछे छोड़ेंगे । कोविड—१९ की वजह से हमें ऑनलाइन शिक्षा का महत्व अत्याधिक प्रभावित कर रहा है यही कारण है कि आज अनेक विश्वविद्यालयों में परीक्षाएं ऑनलाइन लिए जा रही है असाइनमेंट हउंपस पर स्वीकृत किया जा रहा है और अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार, फैकल्टी डेवलपमेंट कोर्स सभी ऑनलाइन के जरिए चल रहे हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में संचार और तकनीकी का ही प्रभाव कहा जाएगा। वर्तमान समय में संचार माध्यम और तकनीकी छात्र तथा अध्यापक दोनों को अत्याधिक प्रभावित कर रहे हैं उसका कारण यह है कि इसमें श्रम और समय दोनों की बचत होती है किंतु कहा जाता है एक सिक्के के दो पहलू होते हैं अर्थात किसी भी चीज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव होते हैं संचार माध्यम तकनीकी का प्रयोग अच्छे कर्मों के लिए यदि किया जाए तो वह अवश्य लाभदायक होगा।

संदर्भ सूची

प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा कंप्यूटिंग संपादक अल्लाबख्श जमादार जान अहमद

प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग — दंगल झाल्टे

कंप्यूटर अनुप्रयोग— महेश कुमार गुप्ता

प्रयोजनमूलक हिंदी — विनोद कुमार देवरा

नव निकष — लक्ष्मीकांत पांडे

छत्तीसगढ़ विवेक — संपादक डॉ. सुधीर शर्मा

❑❑❑